भजन

आज वाणी की धुन सुनी
सखी री आज वाणी की धुन सुनी
सुध ना रही कछु अपने धनी की
ना सुध थी अपनी

1–मैं जो आयी खेल देखन को,
सुध –बुध थी बिसरी
आप पहचान कराई आ कर
अंगना जान अपनी

2–त्रैगुन फाँस के फंद पड़ी थी
आये के मुक्त करी
देवी – देव और ष्ण से छूटी
श्री प्राणनाथ हैं धनी